खंडः 6, अंकः 10 अक्टूबर 2023 DELHIN/2021/84711

संश्लेषण

सी जी एस मासिक पत्रिका

इजराइल–हमास युद्धः समसामयिक आयाम, वैश्विक परिणाम

Aiming High, Touching Sky

सी जी एस

वैश्विक अध्ययन केंद्र

(पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र)

दिल्ली विश्वविद्यालय

संपादक

प्रोफेसर सुनील कुमार

निदेशक, वैश्विक अध्ययन शोध केंद्र (पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र, डीसीआरसी) एआरसी बिल्डिंग गुरु तेग बहादुर मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

ई-मेल आई डी: director@cgs.du.ac.in

प्रोफाइल लिंक: https://cgs.du.ac.in/directorMessage.html

संपादक मंडल

डॉ रमेश कुमार भारद्वाज

सहायक आचार्य, सरकारी पी.जी कॉलेज, जीवाजी विश्वविद्यालय, श्योपुर पाली रोड, मध्य प्रदेश, पिन कोड-476337
संयुक्त निदेशक, वैश्विक अध्ययन शोध केंद्र (पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र, डीसीआरसी) एआरसी बिल्डिंग गुरु तेग बहादुर मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

ई-मेल आई डी: rkbhardwaj1@cgs.du.ac.in

प्रोफाइल लिंक: https://www.mphighereducation.nic.in

डॉ महेश कौशिक

सहायक आचार्य, श्री अरबिंदो कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, शिवालिक, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017
अध्येता, वैश्विक अध्ययन शोध केंद्र (पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र, डीसीआरसी) एआरसी बिल्डिंग गुरु तेग बहादुर मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

ई-मेल आई डी: mkaushik@cgs.du.ac.in

प्रोफाइल लिंक: https://www.aurobindo.du.ac.in

डॉ संध्या वर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर, श्यामलाल कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय, जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110032
अध्येता, वैश्विक अध्ययन शोध केंद्र (पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र, डीसीआरसी) एआरसी बिल्डिंग गुरु तेग बहादुर मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

ई-मेल आई डी: sverma@shyamlale.du.ac.in

प्रोफाइल लिंक: https://shyamlale.du.ac.in/wp-content/uploads/2021/11/sandhya-Verma-Political-Science.pdf

डॉ अभिषेक नाथ

सहायक आचार्य, एमएलटी कॉलेज, सहरसा; बी एन मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार।

ई-मेल आई डी: tuesdaytrack@gmail.com

प्रोफाइल लिंक: https://bpsm.bihar.gov.in/Assets2022/AssetDetails.aspx?P1=2&P2=12&P3=239&P4=3

© सीजीएस2023

संश्लेषण

इजराइल–हमास युद्धः समसामयिक आयाम, वैश्विक परिणाम

अनुक्रमिका

संपादकीय

1. इजराइल– हमास संघर्षः भूमि, अधिकार और राजनीति
   – डॉ. अभिषेक नाथ 1–4
2. इजरायल–हमास युद्धः इंतिफादा के संदर्भ में समसामयिक परिदृश्य का विश्लेषण
   – रमेश चौधरी 5–14
3. इजराइल हमास युद्धः संभावनाएं एवं चुनौतियां
   – नीलम 15–17
4. इजरायल–हमास युद्धः वर्तमान तनाव का ऐतिहासिक विश्लेषण
   – दुर्गावती 18–21
5. इजराइल–हमास युद्धः संघर्ष और संभावनाओं का अध्ययन
   – एलिन 22–26
6. इजराइल–हमास युद्धः समसामयिक आयाम, वैश्विक परिणाम
   – हिताक्षी गिल 27–31

सम्पादकीय

वैश्विक अध्ययन केंद्र की मासिक पत्रिका, संश्लेषण के 63वें अंक को पाठकों के समक्ष प्रेषित करते हुए हमें एक बार पुनः हर्ष एवं उल्लास का अनुभव हो रहा है। वर्ष 2018 से केंद्र अपनी विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यों के माध्यम से अकादमिक जगत से संबद्ध समस्त शोधार्थियां, शिक्षार्थियों एवं विद्यार्थियों के साथ एक अटूट संबंध बनाए रखने के लिए संकल्पित रहा है। निरंतरता की इस कडी में संश्लेषण का यह अंश एक बार पुनः शोध के प्रति हमारी निष्ठा, गुणवता एवं प्रतिष्ठा का परिचायक है।

इजराइल–हमास संघर्ष की जड़ें 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में पुनः प्रदर्शित होती हैं, जब क्षेत्र में प्रतिस्पर्धी राष्ट्रवादी आंदोलन उभरे थे। फिलिस्तीन में ब्रिटिश शासनादेश की समाप्ति के पश्चात् 1948 में इजराइल राज्य की स्थापना ने पड़ोसी अरब राज्यों व फिलिस्तीनी समूहों के साथ युद्धों तथा विवादों की एक श्रृंखला को जन्म दिया। 1967 के छह दिवसीय युद्ध तथा उसके पश्चात् के क्षेत्रों पर अधिग्रहण ने शत्रुता को और अधिक गहन कर दिया, जिससे चल रहे संघर्ष की नींव रखी गई।

इजराइल–हमास युद्ध ने भू–राजनीतिक परिदृश्य को भी परिवर्तित कर दिया है, जिसमें विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय अभिनेता महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। क्षेत्रीय गठबंधन, बदलती अमेरिकी नीतियां व इजरायल तथा अन्य अरब राज्यों के मध्य विकसित होते संबंधों ने संघर्ष में नए आयाम जोड़े हैं। इन कारकों की जटिल परस्पर क्रिया एक स्थायी समाधान खोजने की कठिनाई को रेखांकित करती है।

इजराइल–हमास युद्ध महत्वपूर्ण समकालीन आयामों व वैश्विक परिणामों वाला एक बहुआयामी संकट है। जैसे–जैसे अंतर्राष्ट्रीय समुदाय इस संघर्ष की जटिलताओं से जूझ रहा है, प्रभावी कूटनीति, मानवीय सहायता तथा दीर्घकालिक समाधानों पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। शांति का मार्ग अभी भी कठिन है, किंतु संघर्ष के समकालीन व वैश्विक पहलुओं को समझना रचनात्मक जुड़ाव के लिए आवश्यक है।

वैश्विक स्तर पर परिदृश्य की परिवर्तनीयता तथा विषय की समसामयिकता को ध्यान में रखते हुए केंद्र ने 'इजराइल–हमास युद्धः समसामयिक आयाम, वैश्विक परिणाम' विषय पर लेख आमंत्रित किये। छह उत्कृष्ट लेखों को सम्पादकीय मंडल ने चयनित किया जो आप सभी के समक्ष

एक प्रकाशित पत्रिका के रूप में उल्लेखित हो रहे हैं। ये समस्त लेख मौलिक होने के साथ–साथ वैश्विक आयामों को भी संबोधित करने का प्रयास कर रहे हैं। स्वतंत्र चिंतन पर आधारित लेखकों के विचार उनकी रचनात्मकता, सृजनात्मकता एवं मौलिकता को भी इंगित करते हैं।

संपादक मंडल मंगलवार, 14 नंवबर 2023

1

इजराइल–हमास संघर्षः भूमि, अधिकार और राजनीति

डॉ. अभिषेक नाथ

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, एम.एल.टी. महाविद्यालय, सहरसा

अब्राहमी धर्मों की भूमि एक बार पुनः सुर्खियों में है जिसके पीछे अक्टूबर 2023 में गाजा सीमा से सटे इजराइल के क्षेत्र में हमास द्वारा वृहत स्तर पर हिंसा और लोगों को बंदी बनाया जाना है। इसने न केवल फिलस्तीन और इजराइल के मध्य शांति के प्रयासों को कमजोर किया अपितु पश्चिमी देशों के 'एक समुदाय, एक राष्ट्र' की नीति पर भी प्रश्न चिन्ह लगाता है जिसके कारण एशिया और अफ्रीका के कई देश आपसी हिंसा और अशांति तथा पलायन की समस्या से जूझ रहे है। यह आलेख इजराइल–फिलिस्तीन संघर्ष के परिप्रेक्ष्य में इन्ही प्रश्नों की पड़ताल करता है और इसके वैश्विक प्रभावों का विश्लेषण करता है।

इजराइल और फिलिस्तीनः संघर्ष और सुलह

जब ओटोमन साम्राज्य का पतन प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् हुआ तब वर्तमान के फिलिस्तीन–इजराइल की भूमि फिलिस्तीन के नाम से जानी जाती थी जिसमें मुस्लिम बहुसंख्यक और यहूदी अल्पसंख्यक निवास करते थे। ज्ञात है कि यहूदी धर्म जो फिलिस्तीनी भूमि की मूल धर्म है, के अनुयायियों को उसी भूमि पर इसाई और इस्लाम धर्म के उदय के बाद बड़े पैमाने पर हिंसा और पलायन का सामना करना पड़ा।

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् यह क्षेत्र ब्रिटिश अधिशासन के तहत आ गया और 1948 में ब्रिटेन ने फिलिस्तीनी भूमि को दो मुख्य समुदायों के लिए विभाजित कर यहूदियों के लिए इजराइल और मुस्लिमों के लिए फिलिस्तीन नामक दो राज्यों का जन्म हुआ। किंतु अरब मुस्लिम देशों ने इजराइल के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया और पूरी फिलस्तीनी भूमि पर मुस्लिमों के अधिकार के लिए इजराइल के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। दूसरी ओर पश्चिमी देशों ने इजराइल को मान्यता प्रदान की और एक ऐसे अंतहीन संघर्ष का मंच तैयार हो गया जिसकी परिणति क्या होगी इसका अनुमान लगाना भी विद्वानों के लिए असंभव नहीं तो कठिन आवश्यक है।

निरंतर संघर्ष (1948 और 1967 युद्ध) और सुलाहों के बाद ओस्लो शांति प्रक्रिया, 1993 के अंतर्गत फिलिस्तानी चरमपंथी संगठन फतह (या, फिलस्तीन मुक्ति संगठन, पी.एल. ओ.) और इसके नेता यासिर आराफात ने दो राष्ट्रों के शांतिपूर्ण अस्तित्व को मान्यता देते हुए इजराइल को स्वीकार कर लिया, किंतु उसी दौरान एक अन्य चरमपंथी संगठन हमास ने फतह के शांति के कार्यकलाप को अस्वीकार कर सम्पूर्ण फिलिस्तीनी भूमि की पुरानी मांग को सामने रखा। आश्चर्यजनक रूप से गाजा पट्टी और वेस्ट बैंक जो दो फिलिस्तीनी इलाके हैं, के गाजा पट्टी में फतह के स्थान पर 2006 के चुनावों में हमास को भारी जीत मिली और तब से गाजा में हमास और वेस्ट बैंक में फतह की सरकार है।

स्मरणीय है कि संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव 181 के तहत 1947 में 55 प्रतिशत भूमि पर इजराइल और 45 प्रतिशत भूमि पर फिलिस्तीन राज्य की स्थापना हुई। किंतु दोनों के मध्य निरंतर संघर्ष के दौरान प्रत्येक बार इजराइल ने अपनी भूमि का विस्तार किया और फिलिस्तीनियों के लिए रहने के लिए स्थान कम परते गयेद्य जबकि ओस्लो एकॉर्ड 1993 और यू.एन. प्रस्ताव संख्या 242 और 338 के द्वारा फिलस्तीन ने इजराइल के अस्तित्व को स्वीकार किया और इसके बदले इजराइल को अपनी सीमा 1967 के पूर्व की स्थिति में लानी थी तथा दोनों ही पक्षों को हिंसा और आतंकवादी कार्यवाही से दूर रहना था। जबकि इसके विपरीत इजराइल ने फिलिस्तीनी इलाकों में भी यहूदियों की बस्तियाँ बसा दी है। जेरुसलम जो एक अंतर्राष्ट्रीय नगर के रूप में मान्यता दी गई उसके भी व्यापक क्षेत्र पर वर्तमान में इजराइल का ही नियंत्रण है। इतना ही नहीं, जो मुस्लिम अल्पसंख्यक इजराइल में निवास करते है उनके साथ भी द्वितीय श्रेणी के नागरिकों के समान व्यवहार किया जाता है। जिसके कारण फिलिस्तीनी लोगों ने 1987 में विद्रोह किया था जिसे प्रथम इन्तिफदा भी कहा जाता है। जिसके पश्चात् ही हमास का भी जन्म हुआ था।

दोनों ही ओर शांतिपूर्ण सहअस्तित्व चाहने वालों के प्रयासों को भी दोनों ही देशों के चरमपंथियों के विरोध का सामना करना पड़ता है। इजराइल के चरमपंथियों द्वारा शांति के पोषक अपने ही प्रधानमंत्री और अन्य राजनेताओं की हत्या के उदाहरण उपस्थित है। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि हमास को भी कभी इजराइल ने स्थापित किया था। दूसरी ओर ईरान और लेबनान जैसे देश हमास और हिजोबुल्लाह जैसे चरमपंथी संगठनो को समर्थन दे रह है वही दूसरी ओर शिया और सुन्नी मुस्लिम देश आपस में भी संघर्षरत है। संयुक्त राज्य अमेरिका और पश्चिमी देश ईरान और इराक जैसे शिया और सुन्नी मुस्लिम देशों से भी संघर्ष में लिप्त है और इजराइल को भी

अपना समर्थन देते है। समग्र रूप से अगर यह कहा जाये कि इस क्षेत्र में लोगों की शांति की भावना के विरुद्ध क्षुद्र भू–राजनीतिक हित अधिक हावी है तो गलत नहीं होगा। जिनका लाभ इस क्षेत्र में संघर्ष और अशांति को बनाये रखने में है। फिलिस्तीन और इजराइल के बीच निम्न मुद्दों पर असहमति और संघर्ष अब तक व्याप्त है:

1. जेरुसलम नगर का स्वामित्व

2. अंतिम और निश्चित सीमा

3. गाजा पट्टी में यहूदियों को बस्ती

4. फिलिस्तिनी शरणार्थियों के भविष्य

विभाजन और अस्थिरता की रणनीति

यह मात्र एक संयोग नहीं हो सकता कि औपनिवेशिक देशों ने जहाँ–जहाँ शासन किया उन क्षेत्रों को स्वतंत्रता प्रदान करने की मजबूरी और भविष्य में उनके विकसित होने की क्षमता और औपनिवेशिक देशों की प्रभुता को चुनौती देने की संभावनाओं को समाप्त करने के लिए उन क्षेत्रों का इस प्रकार से विभाजन किया कि वे सदैव आपस में संघर्षरत रहे। एशिया में भारत–पाकिस्तान, भारत–चीन, उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया, फिलिस्तीन–इजराइल, और समूचा अफ्रीका महाद्वीप ऐसे विभाजन, संघर्ष और अस्थिरता से जूझ रहा है। परिणामस्वरुप इन सभो क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर लोग हिंसा, पलायन और शरणार्थी के रूप में जीने को मजबूर है जबकि इनके देश संसाधन संपन्न है फिर भी इन्हें पश्चिमी देशों के मानवाधिकार सहायता रूपी दान पर जीवन बसर करना पड़ता है।

वर्तमान इजराइल–फिलिस्तीन संघर्ष में हजारों लोगों को अपनी जान गवानी पड़ी है और उससे अधिक लोग शरणार्थी के रूप में रह रहे है। लगभग यही स्थिति अफ्रीका के गृह–युधों और संघर्ष में देखी जा सकती है। भारत पाकिस्तान के विभाजन के दौरान वृहत स्तर पर हिंसा और विश्व का सबसे व्यापक पलायन झेलने को लोग विवश हुए। वर्तमान में भी भारत–पाकिस्तान, और उत्तर–दक्षिण कोरिया के बीच संघर्ष दिन–प्रतिदिन की बात है और दोनों ही क्षेत्र परमाणुशक्ति सम्पन्न होने के कारण विश्व में परमाणु खतरे के लिए भी जाने जाते है।

इन सभी समस्यायों के मूल में जहाँ अविवेकपूर्ण बंटवारे और समुदायों के मध्य संघर्ष को बढावा देकर अपने प्रभुत्व बनाए रखने और राज करने की रणनीति स्पस्ट दिखाई देती है। इन क्षेत्रों में शांति केवल यहाँ के नागरिकों और शांति चाहने वाले नेताओं के मध्य एक सुदृढ़ गठजोड़ से ही संभव है अन्यथा चरमपंथी संगठन और विदशी शक्तियों का लाभ ही इसी में है कि ये क्षेत्र अशांत बने रहे। आशा है कि आने वाली पीढियां इस बात को समझेंगी और सबकी स्वतंत्रता और वैश्विक भाईचारे को स्थापित करेंगी।

♦♦♦♦♦

2

इजरायल–हमास युद्धः इंतिफादा के संदर्भ में समसामयिक परिदृश्य का विश्लेषण

रमेश चौधरी

शोधार्थी, अफ्रीकी अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

इजरायल–हमास युद्ध, इजरायल और फिलिस्तीन आतंकवादियों समूह विशेष रूप से हमास और फिलिस्तीन इस्लामिक जिहाद (PIJ) के मध्य हिंसक युद्ध और तनाव है, जो 7 अक्टूबर, 2023 को शुरू हुआ। जब हमास ने गाजा पट्टी से इजरायल पर जमीनी, समुद्री और हवाई हमला किया। 7 अक्टूबर के आक्रमण में 1200 से अधिक लोग मारे गए, जिनमें मुख्य रूप से इजराइली नागरिक थे, जिससे यह आक्रमण इजरायल की स्वतंत्रता के पश्चात् से सबसे घातक और विनाशकारी दिन बन गया। फिलिस्तीन उग्रवादियों के आक्रमण के दौरान 200 से अधिक लोगों को बंधक बना लिया गया। इस आक्रमण के अगले दिन, इजरायल ने 1973 में योम किप्पुर युद्ध (Yom Kippur war) के पश्चात् पहली बार स्वयं को युद्ध की स्थिति (State of war) में घोषित किया। युद्ध की शुरुआत इजरायल रक्षा बलों (IDF) द्वारा गाजा पट्टी पर हवाई हमले करने और उसके बाद जमीनी सेना और बख्तरबंद सैन्य वाहनों के साथ घुसपैठ की गई।

इजरायल–हमास युद्ध मध्य पूर्व क्षेत्र में परस्पर जुड़े ऐतिहासिक दावे, राष्ट्रवादी आकांक्षाओं और धार्मिक महत्व से उत्पन्न हुआ तनाव है, जो पूर्ण रूप से क्षेत्रीय दावों और धार्मिक पहचान संघर्षों पर केंद्रित है। वर्तमान हिंसक संघर्ष और युद्ध की उत्पत्ति इजराइली रक्षा बलां और नागरिकों पर हमास के फिलिस्तीन आतंकवादियों के आक्रमण व उसके बाद कई नागरिकों को बंधक बनाने में निहित है, जिससे देश में युद्ध आपातकाल लग गया। हमास ने इस आक्रमण को वेस्ट बैंक (West Bank) में इजरायल के सैन्य अभियान और यरूशलेम में अल–अक्सा मस्जिद (Al-Aqsa Mosque) में हुई घटनाओं का प्रतिशोध बताया। 2006 से हमास के नियंत्रण वाले गाजा पट्टी से 5000 से अधिक मिसाइलें दागी गईं। इस हिंसक झड़प में सीमा के दोनों ओर कई लोग हताहत हुए। हमास

द्वारा अप्रत्याशित हिंसक आक्रमण के उत्तर में, इजरायल रक्षा बलों (IDF) ने 'ऑपरेशन आयरन स्वोर्ड' (Operation Iron Sword) शुरू किया, इजराइली रक्षा बल गाजा में हमास के आतंकवादी टिकानों पर निरंतर आक्रमण कर रहे हैं। इजराइली सरकार ने गाजा में जमीनी घुसपैठ करने, हमास और अन्य आतंकी गुटों को नष्ट करने और गाजा पट्टी को अंतरराष्ट्रीय संगठनों को सौंपने का फैसला किया था।

इजरायल–हमास संघर्ष में हिंसा की हालिया वृद्धि ने तीसरे इंतिफादा के बारे में चिंताएँ बढ़ा दी हैं। मध्य पूर्व की राजनीति के कुछ विशेषज्ञों ने हिंसा में वृद्धि को "तीसरे इंतिफादा" की शुरुआत बताया है। इंतिफादा एक अरबी शब्द है जिसका आशय विद्रोह और प्रतिरोध से है और सामान्य रूप से इसे वेस्ट बैंक और गाजा में इजराइली उपस्थिति एवं कब्जे के विरूद्ध फिलिस्तीन विद्रोह का वर्णन करने के लिए संदर्भित किया जाता है। पहला फिलिस्तीन इंतिफादा 1987 से 1993 तक चला, और दूसरा फिलिस्तीन इंतिफादा (अल–अक्सा इंतिफादा) 2000–2005 तक चला। इन दो इंतिफादा या विद्रोहों के परिणामस्वरूप 5000 से अधिक फिलिस्तीनियों और लगभग 1400 इजराइली नागरिकों की मृत्यु हो गई।

इजरायल और हमास के मध्य बढ़ती हिंसा–तनाव से युद्ध में परिवर्तन

7 अक्टूबर, 2023 को हमास ने गाजा पट्टी से इजराइली रक्षा बलों और नागरिकों पर एक आश्चर्यजनक समन्वित हिंसक हमला शुरू किया, जो शेमिनी एत्जेरेट (Shemini Atzeret) पर हुआ था, जो सुक्कोट (Sukkot) त्योहार का एक यहूदी अनुष्ठान था। कई रिपोर्टों के अनुसार कई इजराइली रक्षा बलों के अनेक सैनिक छुट्टी पर थे, और रक्षा बलों का ध्यान गाजा पट्टी के बजाय इजरायल की उत्तरी सीमा पर केंद्रित था। इजरायल पर हमास का हवाई हमला 7 अक्टूबर की सुबह केवल 20 मिनट में इजरायल पर लगभग 2200 मिसाइल रॉकेट दागे जाने के साथ शुरू हुआ। यह हवाई आक्रमण इतना तीव्र और जोरदार था कि कथित तौर पर पूर्ण इजरायल में तैनात अत्यधिक सफल मिसाइल–विरोधी रक्षा प्रणाली, आयरन डोम प्रणाली (Iron dome system, Anti-missile Defence system) को ध्वस्त कर दिया गया, तथापि इजराइली रक्षा बलों ने यह निर्दिष्ट नहीं किया कि कितनी मिसाइलों ने एंटी–मिसाइल रक्षा प्रणाली में प्रवेश किया। जैसे ही मिसाइलों और रॉकेटों ने इजराइली भूमि पर हमला किया, हमास और पीआईजे के लगभग 1500 आतंकवादियों ने सीमा सुरक्षा को तोड़ने के लिए विस्फोटकों और बुलडोजरों का उपयोग करके दर्जनों इजराइली

सीमा चौकियों पर इजरायल में घुसपैठ की, जो कि स्मार्ट, सक्षम और उन्नत रक्षा एवं निगरानीप्रौद्योगिकी के साथ भारी रूप से मजबूत थी। हमास और पीआईजे के उग्रवादियों ने आसपास के कई इजराइली सैन्य चौकियों के लिए संचार नेटवर्क को पूर्णतः अक्षम कर दिया, जिससे उन्हें उन रक्षा प्रतिष्ठानों पर हमला करने और इजरायल के नागरिक क्षेत्रों में बिना पहचाने प्रवेश करने का मौका मिल गया। आतंकवादियों ने तटीय शहर जिकिम के पास मोटरबोट से समुद्री सीमा का उल्लंघन किया। अन्य आतंकवादी मोटर चालित पैराग्लाइडर के रूप में इजरायल में दाखिल हुए।

हमले में लगभग 1200 लोग मारे गए, जिनमें किबुत्जिम में उनके घरों पर आक्रमण करने वाले परिवार और एक बड़े संगीत समारोह में उपस्थित लोग शामिल थे। मरने वालों में वृहत स्तर पर इजराइली नागरिक सम्मिलित हैं किंतु विदेशी नागरिकों की भी बड़ी संख्या है। हमास द्वारा 200 से अधिक इजराइली लोगों को बंधक के रूप में गाजा पट्टी में ले जाया गया। इस हमले के दौरान इजरायल को 22 स्थानों से घुसपैठ का सामना करना पड़ा, जिसमें हमास के आतंकवादी इजराइली क्षेत्र में लगभग 25 किलोमीटर तक घुस गए। पूरे देश में विशेषकर अश्कलोन, तेल अवीव और येरूशलम में अनेक विस्फोट हुए। हमास के हमलावरों ने ग्रामीण समुदायों और दो इजरायली रक्षा बलों के सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया। 7 अक्टूबर को आधुनिक इजराइली इतिहास में "सबसे खूनी और घातक दिन" के रूप में वर्णित किया गया है। तथ्य यह है कि नाजी का यहूदी नरसंहार (Nazi’s Jewish Holocaust) के बाद यहूदी लोगों के लिए यह सबसे घातक दिन था।

हमास ने इस आक्रमण को "ऑपरेशन अल–अक्सा फ्लड" कहा है, जो हाल के वर्षों में हमास का सबसे बड़ा सैन्य आक्रमण है। हमास की सैन्य शाखा 'इज्ज–अद–दीन–कसम ब्रिगेड' के प्रमुख और नेता मोहम्मद डायफ ने हमले को "महान क्रांति का दिन" बताया है। मोहम्मद डायफ (Mohammad Deif) ने कहा कि हमला "अल–अक्सा मस्जिद के अपमान" के उत्तर में शुरू किया गया था, जो कि इजरायल सरकार के दक्षिण पंथी दलों के अति–राष्ट्रवादी समर्थकों द्वारा मस्जिद परिसर में निरंतर विरोध प्रदर्शन का संदर्भ था, जो सत्तारूढ़ गठबंधन का भाग हैं। डायफ ने गाजा, वेस्ट बैंक और इजरायल में प्रत्येक स्थान पर फिलिस्तीनियों से बिना किसी रोक–टोक के आक्रमण करने का आह्वान किया। 8 अक्टूबर को लेबनानी आतंकवादी समूह और राजनीतिक दल हिजबुल्लाह ने इजरायल के कब्जे वाले शेबा फार्म्स क्षेत्र में इजराइली ठिकानों पर लेबनान से विस्फोटक गोले

द्वारा हवाई आक्रमण किया। इजरायल पर हिज्बुल्लाह का यह हमला हमास के आक्रमण के प्रति एकजुटता दर्शाता था।

इस मध्य, इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और शीर्ष सुरक्षा अधिकारियों ने एक आपात बैठक बुलाई है। सदैव सैन्य तैयारी की स्थिति में रहने वाले इजरायल ने जवाबी आक्रमण करने में कोई समय बर्बाद नहीं किया है, गाजा पट्टी में लक्ष्य पर अपने स्वयं के रॉकेट और मिसाइलें लॉन्च की हैं और प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने "युद्ध की स्थिति" की घोषणा की है। इजरायल के रक्षा मंत्री योव गैलेंट ने मीडिया को दिए बयान में कहा कि हमास का यह हमला उसकी एक "गंभीर गलती" है और हमास ने एक युद्ध शुरू कर दिया है जिसमें इजरायल विजयी होगा। इजरायल ने अपनी कार्रवाई का नाम "ऑपरेशन आयरन स्वोर्ड" रखा और सेना के रिजर्व सैनिकों को जुटाने का आदेश दिया जिनकी संख्या करीब 3 लाख बताई गई। 9 अक्टूबर को इजरायली सरकार ने गाजा पट्टी की "पूर्ण घेराबंदी" का आदेश दिया, जिससे गाजा के क्षेत्र में पानी, बिजली, भोजन और ईंधन का प्रवेश बंद कर दिया गया। इजराइली वायु रक्षा बलों ने गाजा, विशेष रूप से हमास के ठिकानों पर बमबारी शुरू कर दी है, गाजा में सकड़ों बमबारी की घटनाएं हुईं और कई ऊंची इमारतें और सार्वजनिक संस्थान नष्ट हो गए।

हमास द्वारा किए गए सैल्वो रॉकेट और मिसाइलों का हमला जमीन, समुद्र और वायु से आक्रमण का पैमाना अभूतपूर्व और अप्रत्याशित है। इजरायल रक्षा बलों ने हमास के हमले को उनका 9/11 या पार्ल हार्बर जैसे सामान क्षण और आधुनिक इजराइली इतिहास का सबसे भयानक निर्दोष नागरिकों का नरसंहार बताया है।

अचानक हिंसक हमलों और गतिविधियों में वृद्धि के कारण, घिरी हुई गाजा पट्टी की सीमा के दोनों ओर रहने वाले लोग अपने घरों को छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर जाने लगे थे। इजरायल ने अपने निवासियों को युद्ध के दौरान घर के भीतर रहने के लिए कहा था। इजरायल हमास के मध्य बढ़ते तनाव और युद्ध को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी चिंता जताई गई है, ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस और भारत ने हमास के आक्रमणों की निंदा की है, जबकि मिस्र के विदेश मंत्रालय ने "अधिकतम संयम बरतने और नागरिकों को और अधिक खतरे में डालने से बचने" का आह्वान किया है।

इजरायल–हमास युद्ध और तीसरे इंतिफादा की संभावनाएँ

इजरायल गाजा में फिलिस्तीन उग्रवादी समूह हमास के विरुद्ध पूर्ण रूप से युद्ध लड़ रहा है। हमास का यह आक्रमण हाल के वर्षों में इजरायल के विरुद्ध किसी फिलिस्तीन समूह द्वारा शुरू किया गया सबसे घातक आक्रमण है। हमले की शुरुआत हमास की ओर से जमीन, समुद्र और हवाई हमले से हुइ, ऐसा युद्ध दृष्टिकोण इजरायल ने अपने हाल के इतिहास में किसी फिलिस्तीन आतंकवादी समूह से कभी नहीं देखा है। हिंसा के अभूतपूर्व पैमाने ने इजरायल के विरुद्ध दो इंतिफादा या फिलिस्तीनियों के विद्रोह को फिर से सुर्खियों में ला दिया है और इस बारे में अटकलें या संभावनाएं हैं कि क्या ये चौतरफा युद्ध तीसरे इंतिफादा या विद्रोह की शुरुआत है। इजरायल दृ हमास संघर्ष में हिंसा की हालिया वृद्धि ने तीसरे इंतिफादा की संभावना बढ़ा दी हैं। मध्य पूर्व की राजनीति के कुछ विशेषज्ञों ने हमास के हमलों और हिंसा को "तीसरे इंतिफादा" का प्रादुर्भाव के रुप में स्पष्ट किया है।

इंतिफादा एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ है विद्रोह करना या हिला देना। यह दिसंबर 1987 में फिलिस्तीन इजरायल संकट के संदर्भ में लोकप्रिय उपयोग में आया, फिलिस्तीनियों ने इसका उपयोग वेस्ट बैंक और गाजा में इजराइली उपस्थिति के खिलाफ अपने विद्रोह का वर्णन करने के लिए किया। फिलिस्तीन–अमेरिकी प्राच्यविद् एडवर्ड सेड ने 1989 में अपने लेख 'इंतिफादा एंड इंडिपेंडेंस' में इंतिफादा का वर्णन उन फिलिस्तीन लोगों की प्रतिक्रिया के रूप में किया है, जिन्हें उनके इतिहास, भूमि और राष्ट्रीयता को लूटने के इजराइली प्रयास ने उन्हें दीवार पर धकेल दिया था। वेस्ट बैंक और गाजा पट्टी में फिलिस्तीनियों के दो लोकप्रिय इंतिफादा और विद्रोहों का उद्देश्य उन क्षेत्रों पर इजरायल के कब्जे को समाप्त करना और एक स्वतंत्र फिलिस्तीन राज्य बनाना था।

पहला इंतिफादा दिसंबर 1987 में शुरू हुआ और सितंबर 1993 में पहले ओस्लो समझौते पर इजराइली प्रधानमंत्री यित्जाक राबिन (Yitzhak Rabin) और फिलिस्तीन मुक्ति संगठन (PLO) के अध्यक्ष यासेर अराफात (Yasser Arafat) द्वारा हस्ताक्षर के साथ समाप्त हुआ, जिसने इजरायल और फिलिस्तीन समकक्षों के मध्य शांति वार्ता के लिए एक रूपरेखा प्रदान की। दूसरा इंतिफादा, जिसे आमतौर पर अल–अक्सा इंतिफादा कहा जाता है, सितंबर 2000 में शुरू हुआ। हालांकि किसी भी एक घटना ने इसके अंत का संकेत नहीं दिया, अधिकांश विश्लेषक इस बात से सहमत हैं कि यह 2005 के अंत तक अपना काम कर चुका था। दूसरे इंतिफादा के अंत होने के बाद से इजरायल और फिलिस्तीन के मध्य तनाव शांत नहीं हुआ है। इजरायल ने फिलिस्तीन क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति का विस्तार करना जारी रखा है और पलेस्टाइन लिबरेशन फ्रंट (पीएलएफ), पलेस्टाइन इस्लामिक

जिहाद (पीआईजे) और हमास जैसे पूरे फिलिस्तीन संगठनों ने विद्रोह, आतंकवादी हमले और बमबारी बढ़ा दी है।

पिछले कुछ वर्षों से कई विद्वानों और विशेषज्ञों द्वारा तीसरे फिलिस्तीन इंतिफादा के भड़कने की चिंता व्यक्त की जा रही है, क्योंकि विशेष रूप से इजरायल में अति–राष्ट्रवादी दक्षिणपंथी शक्तियों के उदय और फिलिस्तीन के प्रति उनके चरम रुख के मध्य तीसरे फिलिस्तीन इंतिफादा और विद्रोह की संभावना बढ़ गई है। अमेरिकी थिंक टैंक 'काउंसिल ऑन फॉरेन रिलेशंस' के अनुसार, "2015 के बाद से 2022 में इजरायलियों और फिलिस्तीनियों दोनों के लिए सबसे अधिक संघर्ष–संबंधी मौतें हुईं। अक्टूबर 2023 तक हिंसा बढ़ती रही और अब स्थिति इजरायल और हमास के मध्य भीषण युद्ध में बदल गई है। वेस्ट बैंक के साथ दैनिक इजरायली घुसपैठ के मध्य 2005 के बाद से अपने सबसे घातक वर्ष की राह पर है।"

इजरायल ने इस साल यरूशलेम में इस्लामिक पवित्र स्थल अल–अक्सा मस्जिद पर भी कई छापे मारे हैं, जिससे तनाव और बढ़ गया है और अंततः हमास के हालिया हमले की कार्रवाई हुई, जिसका नाम मस्जिद के नाम पर ही हमास द्वारा 'ऑपरेशन अल–अक्सा' रखा गया है। अल–अक्सा मस्जिद फिर से इजरायल और विभिन्न फिलिस्तीन आतंकवादी समूहों के मध्य संघर्ष के केंद्र में है। अप्रैल में, हमास प्रमुख इस्माइल हानियेह (Ismail Haniyeh) ने कहा कि यरूशलेम में अल–अक्सा मस्जिद के विरुद्ध इजराइली आक्रामकता और छापे के पश्चात् "फिलिस्तीन हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठेंगे"।

विभिन्न इजराइली खुफिया और रक्षा एजेंसियों के अनुसार इजरायल के कब्जे वाला वेस्ट बैंक "तीसरे इंतिफादा" के कगार पर है क्योंकि इजरायल और हमास के मध्य चल रहे युद्ध के दौरान क्षेत्र में आर्थिक और राजनीतिक स्थिति लगातार बिगड़ रही है। डैनियल बायमेन के अनुसार, यह बहुत संभव है कि वेस्ट बैंक में किसी छोटी सी अनियोजित घटना क कारण हिंसा भड़क उठेगी जो पूरी स्थिति को तीसरे फिलिस्तीन इंतिफादा की ओर ले जा सकती है। डैनियल बायमेन ने अपने लेख 'डिड हमास इग्नाइट ए थर्ड इंतिफादा?' में तीसरे इंतिफादा के प्रज्वलित होने की संभावना बताते हुए बायमेन ने कहा कि यह सब वेस्ट बैंक पर निर्भर करता है कि अधिग्रहण वाले वेस्ट बैंक से फिलिस्तीन लोगों मुद्दों के लिए उठने वाली आवाज और विरोध पर इजरायल कैसे प्रतिक्रिया देता है।

और यरूशलेम में जमीनी चर्चा में, अरब और यहूदी दोनों खुले तौर पर तीसरे इंतिफादा की बढ़तीसंभावना के बारे में बात कर रहे हैं। विशेषकर पूर्वी येरुशलम में फिलिस्तीन प्रदर्शनकारियों और इजरायली पुलिस के मध्य रोजाना झड़पें हो रही हैं, दोनों ओर से चेतावनियाँ और धमकियाँ निरंतर बढ़ रही हैं। अब तक, हिंसा का यह नया चक्र जो इजरायल और हमास के मध्य गंभीर युद्ध में परिवर्तित हो गया, दूसरे की तुलना में पहले इंतिफादा से अधिक मिलता–जुलता है, यह स्वतः स्फूर्त और विकेंद्रीकृत है। किंतु जैसा कि गाजा में हालिया युद्ध और दूसरा इंतिफादा हमें याद दिलाता है, भूमध्यसागरीय पट्टी में एक बार फिर दुखद व भीषण संघर्ष को भड़काने के लिए अतिरिक्त चिंगारी की आवश्यकता नहीं होगी, इजरायल हमास युद्ध के पश्चात अनायास ही तीसरा इंतिफादा भड़क सकता है।

'ग्लोबलाइज द इंतिफादा'–इंतिफादा का वैश्वीकरण

'ग्लोबलाइज द इंतिफादा' (Globalize the Intifada), इंतिफादा का वैश्वीकरण एक नारा है जो आमतौर पर दुनिया के विभिन्न हिस्सों में फिलिस्तीन पर इजराइली नियंत्रण के खिलाफ फिलिस्तीन प्रतिरोध के समर्थन में वैश्विक सक्रियता की वकालत करने के लिए उपयोग किया जाता रहा है। इस नारे का विचार या उद्देश्य फिलिस्तीन इंतिफादा का सार्वभौमिकरण है, इंतिफादा शब्द फिलिस्तीन विद्रोह या प्रतिरोध को संदर्भित करने के लिए किया जाता हैं और "वैश्वीकरण" का आह्वान इन विद्रोहों की भावना और कार्रवाई को क्षेत्रीय संदर्भ से परे एक विश्वव्यापी आंदालन तक विस्तारित करने का सुझाव देता है। विभिन्न विरोध प्रदर्शनों और सोशल मीडिया पोस्ट के माध्यम से "इंतिफादा का वैश्वीकरण" करने का आह्वान कुछ लोगों द्वारा इन पिछले विद्रोहों के समर्थन और वैश्विक स्तर पर उनके विस्तार के आह्वान के रूप में किया जा रहा है।

'ग्लोबलाइज द इंतिफादा' का नारा विभिन्न इजरायल–विरोधी और यहूदी–विरोधी विरोध प्रदर्शन में एक नारे के रूप में उपयोग किया गया है, जिसका उपयोग "देयर इज ऑनली वन सॉल्यूशन इंतिफादा रेवोल्यूशन (केवल एक ही समाधान है, इंतिफादा क्रांति)" या "इंतिफादा अंटिल विक्ट्री (जीत तक इंतिफादा)" जैसी विविधताओं के साथ किया जा रहा है। इसका उपयोग हाल ही में इजरायल पर हमास के हमले के समर्थकों द्वारा और इजरायल हमास युद्ध के दौरान इजराइली कार्रवाई के खिलाफ किया गया है। नारे के उपयोगकर्ताओं के अनुसार, फिलिस्तीन इंतिफादा को औपनिवेशिक हिंसा और उत्पीड़न के रूप में देखने वाले प्रतिरोध के नारे के रूप में संदर्भित किया जा रहा हैं। अक्टूबर 2023 में, फिलिस्तीन समर्थक प्रदर्शनकारियों ने न्यूयॉर्क शहर में एक पुस्तकालय

भवन में जबरन प्रवेश करने का प्रयास करते हुए 'ग्लोबलाइज द इंतिफादा' का नारा लगाया, जहाँ यहूदी छात्रों ने विरोध किया था, जिसे आलोचकों ने यहूदी–विरोधी घटना के रूप में वर्णित किया था।

'ग्लोबलाइज द इंतिफादा' के नारे की विभिन्न समूहों और व्यक्तियों द्वारा आलोचना की गई है। एंटी–डिफेंसिमेशन लीग (एडीएल) ने 'ग्लोबलाइज द इंतिफादा' की व्याख्या संभावित रूप से आतंकवाद के कृत्यों और नागरिकों के खिलाफ अंधाधुंध हिंसा के समर्थन के रूप में की, इसे इजरायल और संभवतः दुनिया भर में यहूदियों के खिलाफ हिंसा के आह्वान के रूप में स्पष्ट किया। अमेरिकी यहूदी समिति ने 'ग्लोबलाइज द इंतिफादा' नारे के इस्तेमाल पर कड़ी चिंता व्यक्त की और कहा कि यह खतरे का कारण होना चाहिए। उन्होंने महत्वपूर्ण हिंसा से चिह्नित, पहले और दूसरे फिलिस्तीन इंतिफादा का संदर्भ दिया जिसके परिणामस्वरूप 1300 से अधिक इजरायलियों की मौत हो गई, कई आत्मघाती हमलावरों ने बसों, बाजारों और मॉल्स जैसे सार्वजनिक स्थानों को निशाना बनाया। अमेरिकी यहूदी समिति ने 'ग्लोब्लाइज द इंतिफादा' नारे की व्याख्या व्यापक हिंसा के आह्वान के रूप में की और इस नारे को स्वाभाविक रुप से यहूदी–विरोधी माना।

इजरायल और हमास के मध्य चल रहा युद्ध अभी तक फिलहाल इंतिफादा नहीं है, किंतु भूमध्यसागरीय पट्टी के क्षेत्र आधिकारिक तौर पर नामित किए बिना भी काफी संघर्ष कर रहे हैं। इजरायल–हमास युद्ध मध्य पूर्व दुनिया में राजनीतिक, आर्थिक, कूटनीतिक और रणनीतिक पहलुओं के साथ–साथ क्षेत्रीय और वैश्विक परिणामों के साथ संघर्ष का एक प्रमुख उदाहरण है। इजराइली क्षेत्रों पर हमास का हमला और अब स्थिति इजरायल और हमास के मध्य युद्ध में बदल गई है, जिससे तीसरा इंतिफादा आसानी से भड़क सकता है, जिसका संभावित कारक इजरायल के खिलाफ वेस्ट बैंक में होने वाली विभिन्न घटनाएं और 'ग्लोबाइज द इंतिफादा' के विचार का सार्वभौमिकरण है।

संदर्भ सूची:

- ADL (2023). *"Stop and Think: Anti-israel Chants and what they Mean.* Anti-Defamation League
- AJC. (2023). *"What Does 'Globalize the Intifada' mean and how can it lead to Targeting Jews with Violence?".* American Jewish committee
- Bandler, Aaron. *(2021) "Pro-Palestinian NYC rally features 'Globalize the Intifada' chants". Jewish Journal*
- Byman, Daniel. (2023) *"Did Hamas Ignite a third Intifada?"*. Foreign Affairs
- Byman, Daniel. (2023) *"The third Intifada? Why the Israeli – Palestinians conflict might boil over again".* Foreign Affairs
- Clerking, Ben. (2023). *"Jewish students lock themselves in library as protestors March through campus.* The Jewish Chronicle
- Said, Edward. (1989) *"Intifada and Independence".* Social Text
- Sengupta, Arjun. (2023) *"Hamas-Israel Escalation: What we know so far, and whether it could lead to the third Intifada".* The Indian Express
- Sharma, Divyam. (2023) "*'Intifada' and its significance amid Israel – Gaza War".* NDTV World
- Siniver, Asaf. (2023) *"Jerusalem, Israeli Settlements and why a third Intifada could be about to kick off".* The Conversation
- Tress, Luke. (2023) *"Antisemitic incidents have spiked in New York since Hamas Attack on Israel, NYPD Says"* Forward

- The Palestine Chronicle (2021) *“‘Globalize Intifada’: Pro-Palestine Protesters March in New York”.*

♦♦♦♦♦

3

इजराइल हमास युद्धः संभावनाएं एवं चुनौतियां

नीलम

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

इजराइल हमास युद्ध एक दशकों से चल रही जटिल संघर्ष का व्रतांत है, जो पश्चिमी तटों के राजनीतिक व सामाजिक संघर्षों को प्रभावित कर रहा है। इजराइल और फिलिस्तीन दो ऐसे देश है जिनका विवाद अत्यधिक लंबे समय से चला आ रहा है। दोनों देशों के मध्य शांति स्थापित करने और मतभेद को समाप्त करने के लिए कई बार समझौते हुए पर निष्कर्ष कुछ विशेष नहीं निकला। इस लेख के माध्यम से उन सभी बिन्दुओ को रेखाकित करने का प्रयास करेंगे जिनके कारण इन दोनों देशों के मध्य का विवाद दिन–प्रतिदिन बढ़ता चला गया।

इजराइल और फिलिस्तीन के मध्य मतभेद का आरंभ ओटोमन साम्राज्य के समाप्त होने के साथ होती है। इस समय सम्पूर्ण यूरोप में राष्ट्रवाद का प्रभाव देखा जा रहा था। टुकड़ों में बँटे कई देशों को राष्ट्रवाद की लहर एक कर रही थी। इनका प्रभाव यहूदियों के मध्य भी देखने का मिला। राष्ट्रवाद की भवन यहूदी लोगों के मध्य भी जगी, उन्हे भी अपने पवित्र स्थान पर पुनरू जाने की लालसा हुई। यही से सियोनवाद आंदोलन की शुरुआत होती है।

19वीं शताब्दी मैं यहूदियों की यह पवित्र भूमि फिलिस्तीन के नाम से जानी जाती थी। सियोनवादी आंदोलन के दौरान जगह–जगह बिखरे यहूदियों का पलायन फिलिस्तीन की और हुआ।

- बेलफौर डेक्लरैशन– 1917 में प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटेन के विदेश मंत्री सर आर्थर बेलफौर ने एक घोषणा की, जिसके अंतर्गत यह इंगित किया गया कि ब्रिटेन, यहूदियों को पुनर्वास करवाएगा। वही दूसरी तरफ साइक्स पिकॉट घोषणा पर हस्ताक्षर किया और मध्य पूर्व को अलग–अलग हिस्सों में विभाजित कर दिया।

- प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात्– इस समय में फिलिस्तीन ब्रिटिश शासनादेश की शुरुवात होती है। जिसके कारण भारी मात्रा में यहूदियों का पलायन फिलिस्तीन में हो रहा था। यहूदियों ने अपनी जमीने खरीदनी शुरू की व फिलिस्तीन में अपना प्रभुत्व सुदृढ़ करने के बाद उन्होंने अरब फिलिस्तीनियों को भगाना शुरू किया। इसके कारण अरब फिलिस्तीनियों ने 1936 में विद्रोह कर दिया। इसके पश्चात अरब फिलिस्तीनियों को शांत करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने यहूदी प्रवास पर कई तरह की रोक लगा दी। इसके चलते यहूदी लोग ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध हो गए।
- द्वितीय विश्व युद्ध– हिटलर के शासन काल के दौरान सम्पूर्ण यूरोप में भयंकर स्तर पर यहूदियों का नरसंहार हुआ। करीब 42 लाख यहूदियों को गैस चौम्बर में डालकर मार दिया गया। इसके पश्चात् यूरोप में रह रहे यहूदियों को महसूस हुआ कि फिलिस्तीन के अतिरिक्त कही कोई अन्य स्थान नहीं है जहा यहूदी सुरक्षित रह सके।
- इजराइल का उद्भव– द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् संयुक्त राष्ट संघ अस्तित्व में आता है। यहूदियों और अरब लोगों के मध्य मतभेद इतना बढ़ चुका था कि ब्रिटेन इस विषय का समाधान करने में सक्षम नहीं था, इसलिए उसने यह मसला संयुक्त राष्ट संघ में भेज दिया। वोटिंग के पश्चात, यह परिणाम निकल कि जहा यहूदियों की संख्या ज्यादा है, उन्हे इजराइल दिया जाएगा। वही जिस स्थान पर अरब बहुसंख्यक है, उन्हे फिलिस्तीन दिया जाएगा। तीसरा था, येरूशलम जहां अर्द्ध जनसंख्या यहूदी थी व आधी मुस्लिम। इसे लेकर यूएनओ ने कहा कि इस क्षेत्र पर अंतर्राष्टोय नियंत्रण लागू होगा।
- अरब इजराइल युद्ध (1948–49)– यूएनओ के इस निर्णय के पश्चात ही नवनिर्मित इजराइल के पड़ोसी देशों (मिस्र, सीरिया, जॉर्डन व इराक) ने इजराइल पर हमला कर दिया। इस युद्ध में इजराइल ने अपना बचाव करते हुए इन चारों देशों को पराजित कर दिया।
- 1967 युद्ध (6 दिवसीय युद्ध)– इस युद्ध को 6 दिवसीय युद्ध कहा जाता है, जब मिस्र,सीरिया व जॉर्डन जैसे अरब राष्टों ने इजराइल के विरुद्ध सामूहिक युद्ध छेड़ दिया था। इजराइल ने इस युद्ध में सफल होकर निम्न स्थानों पर अपना नियंत्रण स्थापित किया।
- सिनाई प्रायद्वीप व गाजा पट्टी मिस्र से
- वेस्ट बैंक जॉर्डन से
- गोलन पहाड़िया सीरिया से

ओस्लो समझौता 1993– इजराइल का फिलिस्तीन पर पूर्ण नियंत्रण हो चुका था। इसी कड़ी में यासिर अराफात ने एक संगठन की शुरुवात की– फिलिस्तीन मुक्ति संगठन, जो देश में हिंसक गतिविधियों के लिए एक कारक था। तत्पश्चात, एक बहुत बड़ा परिवर्तनकारी दौर आता है। दोनों देशों के मध्य शांति स्थापित करने के लिए 1993 में ओस्लो समझौता होता है। यह वह समझौता था जिसने इजराइल को एक भिन्न राष्ट के रूप में फिलिस्तीन के अस्तित्व को स्वीकार करने के लिए प्ररित किया। इसमे इजराइल को फिलिस्तीनियों को अधिक स्वायत्ता देने के लिए कहा गया था। इस समझौते में यह भी निर्णय लिया गया कि फिलिस्तीन सरकार वेस्ट बैंक व गज पट्टी को लोकतान्त्रिक ढंग से नियंत्रित करेगी। यह समझौता पाँच वर्षों के लिए किया गया था। इसके पश्चात् पुनः शांति समझौते के लिए कैम्प–डेविड द्वितीय (2000) में इजराइल व फिलिस्तीन एक मंच पर आए। दोनों देशों के मध्य इस समझौते में कोई विशेष सहमति नहीं बन पाई। इसके चलते यह शांति समझौता टूट गया। तब से लेकर आज तक दोनों देशों के मध्य किसी विषय पर सहमति नहीं बन पाई है।

- हमास का उद्भव– फिलिस्तीन में हमास (वर्तमान परिप्रक्ष्य में इसे आतंकवादी संगठन की संग दी जाती है) राजनीतिक पार्टी का गज में उद्भव होता है। वही दूसरी तरफ, फिलिस्तीन मुक्ति संगठन से संबंधित पार्टी फतह, हमास को सरकार में लेने के समर्थन में नहीं है। 2007 में गाजा पर हमास का पूर्णतः नियंत्रण हो जाता है। हमास जो एक लोकतान्त्रिक संगठन के रूप में गाजा पट्टो को नियंत्रित कर रहा है, इजराइल द्वारा एक आतंकवादी संगठन घोषित है, जिसके कारण बड़ी संख्या में इजराइल के लोगों की जान गई है। हमास गाजा पट्टो में दक्षिण पंथी विचारधारात्मक पार्टी है। उग्र राष्ट्रवाद के नशे में हमास गाजा पट्टी से इजराइल पर खतरनाक रॉकेट से हमला करता रहता है। इस कारण इजराइल ने गाजा पट्टी का पूर्णतः लॉक कर रखा है। जिसके चलते गाजा के हालत दिनोंदिन खराब होते जा रहे है, बेरोजगारी का स्तर बढ़त जा रहा है, बिजली–पानी की समस्या काफी ज्यादा है। यही हालत आज भी है।

अंतः हम कह सकते है कि युद्ध जैसी परिस्थितियों का सामना इजराइल ने स्वतंत्रता से ही संप्रभु राष्ट्र के रूप में किया है। हमास का मानना है कि फिलिस्तीन की भूमि के किसी भी भाग का समझौता नहीं किया जाएगा और न ही उसे किसी को दिया जाएगा। फिलिस्तीन की पूर्ण मुक्ति के अतिरिक्त, हमास अन्य सभी विकल्पों को अस्वीकार करता है।

♦♦♦♦♦

4

इजरायल–हमास युद्धः वर्तमान तनाव का ऐतिहासिक विश्लेषण

दुर्गावती

विद्यार्थी, जीसस एंड मैरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

इजराइल और हमास के युद्ध को समझने से पहले इसके इतिहास को समझना अवश्य है, अंततः इजराइल और हमास के मध्य इतना संघर्ष क्यों होता रहता है और क्या कारण है यहूदियों और मुसलमानों के मध्य तकरार की ये समस्या शुरू होती है। वर्तमान समय के इजराइल में स्थित एक जगह येरूशलम, ये स्थान तीन धर्मो के लिए बहुत पवित्र स्थान है यहूदी, मुस्लिम और ईसाई येरूशलम को बहुत पवित्र मानते हैं।

येरूशलम का इतिहास

वर्ष 1047 ईसा पूर्व यहूदियों के राजा, राजा सोलोमन का शासन था। राजा सोलोमन ने अपनी राजधानी येरूशलम में उनका फर्स्ट टेंपल बनवाया जिसका नाम टेंपल माउंट रखा गया, यहूदियों के मान्यता के अनुसर भगवान ने उस स्थान से मिट्टी ली और एडम का निर्माण किया जिसने बाद में धरती पर इंसान की रचना की इसी स्थान पर राजा सोलोमन ने फर्स्ट टेंपल बनवाया, ये स्थान यहूदियों के लिए धार्मिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण है। ये यहूदी धर्म के लोग वहा पूजा किया करते थे। कुछ साल बाद 586 ईसा पूर्व में बेबीलोनिया आते हैं और वो फर्स्ट टेंपल को तोड़ देते हैं बेबीलोनिया के बाद फारसी आते हैं, वो फर्स्ट टेंपल का निर्माण दोबारा करवाते हैं दोबारा निर्माण होने के कारण उसका नाम सेकंड टेंपल रख दिया जाता है फारसी के बाद रोमन आते हैं और वो सेकंड टेंपल को तोड़ देते हैं। इस बार केवल मंदिर की दीवार बचती है जिसे आज के समय में वेस्टर्न वॉल के नाम से जाना जाता है। रोमन पूरी तरह से अपना शासन स्थापित कर लेता है और रोमन साम्राज्य में यहूदियों पर बहुत अत्याचार होने लगे जिस कारण यहूदी बड़ी संख्या में युरोप जाने लगे। वर्ष 306 AD आता है इस समय रोमन के राजा कॉन्सटेंटाइन द ग्रेट बने, उनका इसाई धर्म के प्रति काफी झुकाव था उन्होंने इसाई धर्म को अपना लिया राजा के इसाई बने के बाद साम्राज्य में इसाई धर्म का बहुत प्रचार हुआ। किंग कांस्टेनटाइन द ग्रेट ने येरूशलम में जहां

यहूदियों ने यीशु को क्रॉस पर लटकाया था, उसी स्थान पर एक चर्च का निर्माण करवाया गया चर्च का नाम रखा गया चर्च ऑफ द होली सेपुलचर ये चर्च इसाई के लिए बहुत ही पवित्र स्थान बन गया। 638 AD में उमर की अरब सेना आती है अरब सेना ने रोमन को हरा कर अपना शासन स्थापित कर लिया, मुसलमानों के लिए भी जेरूसलम उतना ही महत्वपूर्ण है जितना यहूदी और इसाई के लिए येरूशलम का जिक्र कुरान में मिलता है। कुरान के अनुसार पैगंबर मोहम्मद अपने उड़ने वाले घोड़े पर मक्का से येरूशलम आए थे और येरूशलम से जन्नत की यात्रा की थी, जिस जगह पैगंबर मुहम्मद ने अपना घोड़े से उतरे थे उस स्थान पर अल अक्सा मस्जिद बनाई गई और जिस स्थान से वे जन्नत की ओर गए वहा डोम ऑफ द रॉक का निर्माण हो गया मुस्लिमों के अनुसार मक्का और मदीना के बाद येरूशलम उनके लिए महत्वपूर्ण स्थान है। इसके 2 किमी दूर चर्च ऑफ द होली सेपुलचर है ये टेम्पल माउंट के करीब स्थित है टेम्पल माउंट को मुस्लिम हरम अल शरीफ कहते हैं येरूशलम की लगभग 35 से 37 एकड़ की जमीन तीन धर्मो के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यरूशलेम में नियंत्रण और प्रभुत्व इस क्षेत्र में विभिन्न हितधारकों के बीच हिंसक संघर्ष का मुख्य मुद्दा है।

इजराइल–फिलिस्तीन विवाद और हमास

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मुख्य रूप से यहूदी युद्ध में ब्रिटेन और मित्र राष्ट्रों का समर्थन देते हैं और दुसरी तरफ ओटोमन साम्राज्य जिसका वर्तमान समय के इजराइल और फिलिस्तीन पर शासन हुआ करता था और वो विश्व युद्ध में जर्मनी का साथ देता है, द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होता है और ब्रिटेन की जीत होती है, यहूदियों का साथ पाकर ब्रिटेन फैसला करता है कि यहूदियों का एक अलग देश होना चाहिए ब्रिटेन द्वारा फिलिस्तीन को दो देशो में बंटवारा कर दिया जाता है और यहूदियों का एक नया देश बनाया जाता है, जिसका नाम इजरायल दिया जाता है। 14 मई 1948 को यहूदियों का अपना एक देश बनता है केवल के दिन के बने देश पर अरब देश हमला कर देते हैं जैसे लेबनान, सीरिया, इराक और मिस्र हमले बाद पूरा क्षेत्र तीन हिस्सों में बाँट दिया गया गाजा पट्टी, वेस्ट बैंक और इजराइल गाजा पट्टी और वेस्ट बैंक में फिलिस्तीन के लोग रहते हैं।

हमास का गठन 1987 को हुआ हमास शब्द का अर्थ अरबी भाषा में उत्साह है और हमास का पूरा नाम हरकत अल मुकावामा अल इस्लामिया है। हमास का मुख्य उदेश्य इजराइल में इस्लामिक शासन को लागू करना और इजराइल पर अधिकार जमाना साथ ही येरूशलम को पाना है।

7 अक्टूबर 2023 इजराइल–हमास युद्ध

7 अक्टूबर 2023 को शनिवार का दिन यहूदियों के त्योहार के कारण अवकाश था, इस दिन सभी यहूदी एकजुट होकर अपनी धार्मिक पुस्तक पढ़ते हैं, यहूदी अपनी धार्मिक पुस्तक तोरा पढ़ रहे थे और तोहार का आनंद ले रहे थे उसी दिन हमास ने इजराइल पर 5000 मिसाइल के साथ हमला कर दिया। इस हमले के बाद इजराइल में अफरा तफरी हो गई और इजरायल के नागरिको को बम शेल्टर में जाके छुपना पड़ा इजराइल ने कई रॉकेट को आयरन डोम की मदद से रोक लिया था, परंतु फिर भी 1160 लोग मारे गए और 1590 लोग घायल हो गए साथ ही 250 लोगों को हमास ने अगवा कर लिया। इजराइल ने हमास के हमले पर तुरंत युद्ध का एलान कर दिया इजराइल में हवाई हमले के साथ अपना जवाब दिया इजराइल का लक्ष्य गाजा पट्टी में स्थित हमास का पूरा विनाश करना है, इजराइल ने हवाई हमले के साथ जमीनी युद्ध ही आरंभ कर दिया। इजराइल गाजा शहर में और गाजा के नीचे हमास के सुरंग में हमला कर दिया, इजराइल का कहना था कि इस इलाके में हमास का केंद्र है दोनों ही देश के हमले तेज हो जाते हैं जमीनी युद्ध के कारण गाजा पट्टी के निवासी रफा कि ओर चले जाते हैं।

इजराइल–हमास युद्ध–वैश्विक परिणाम

आधुनिक काल में विश्व के किसी भी क्षेत्र विशेष में हिंसक संघर्ष और युद्ध होता है तो केवल युद्ध दो देशो या उस क्षेत्र तक सीमित नहीं होता है बल्कि युद्ध का सम्पूर्ण विश्व पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इजराइल और फिलिस्तीन के सीमा से जुड़े देश में हिंसा बढ़ सकती ह, अस्थिरता और संघर्ष में वृद्धि की संभावना है, इजराइल हमास युद्ध से वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसका असर दिखता है युद्ध के परिणामस्वरूप कच्चे तेल की कीमत में बढ़ोतरी देखी जा सकती है, वैश्विक स्तर पर तेल की कीमत 150 डॉलर बेरल बढ़ सकती है, वैश्विक रूप से आर्थिक विकास में भी कमी की संभावना है। भारत, अमेरिका और चीन जैसे देश को प्रमुख हानि उठानी पड़ सकती है, साथ ही तेल की कीमतों में बढ़ोतरी के कारण वैश्विक व्यापार और उद्योग को भारी नुकसान होने की आशंका है।

सन्दर्भ सूचीः

- https://www-britannica-com
- www-drishtiias-com
- https://economic-com

♦♦♦♦♦

5

इजराइल–हमास युद्धः संघर्ष और संभावनाओं का अध्ययन

एलिन

विद्यार्थी, जीसस एंड मेरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

इजराइल–हमास युद्धः पृष्ठभूमि

इजराइल–हमास के मध्य संघर्ष की जड़ें अत्यधिक प्राचीन है, जिसकी शुरुआत 1987 में हमास की स्थापना से हुई थी। हमास जो की फिलिस्तीन का इस्लामिक प्रतिरोध संगठन है, जो गाजा पट्टी और पश्चिमी किनारे में इजराइल के विरूद्ध संघर्ष कर रहा है। इसका उद्देश्य फिलिस्तीन की स्वतंत्रता और इस्लामिक राजय की स्थापना करना है।

हमास की गतिविधियाँ 1987 की पहली इंतिफादा (विद्रोह) के दोहरान आरंभ हुई। 1993 में, ओस्लो समझौता हुआ, इसके बाद भी संघर्ष जारी रहा, हमास का इजरायल को मान्यता ना देना इसका प्रमुख कारण रहा। 2000 में दूसरी इंतिफादा हुई, के दौरान हमास ने इजरायल पर कई आत्मघाती हमले करने शुरू कर दिए। इसके परिणामस्वरूप दोनों पक्षों के बीच तनाव में वृद्धि हुई।

2006 के संसदीय चुनावों में हमास ने फिलिस्तीन में विजय प्राप्त की और गाजा पट्टी का नियंत्रण अपने हाथ में लिया। इसके पश्चात् इजराइल और हमास के बीच कई संघर्ष हुए, जिसमें 2008–09, 2012, 2014 और 2021 के युद्ध शामिल है। इन सभी संघर्षों में जहाँ हमास ने इजरायल पर रॉकेट हमले किए तो वहाँ इजराइल ने गाजा पट्टी पर हवाई हमले किए। इन सभी संघर्षों में बड़े पैमाने पर नागरिक हताहत हुए और दोनों पक्षों में एकदूसरे पर मानवाधिकार के उल्लंघन के आरोप लगाये।

इजराइल और हमास के बीच युद्ध का वैश्विक तौर पर प्रभाव भी व्यापक रहा है। इस संघर्ष में मध्य पूर्व में आज स्थिरता की स्थिति को बढ़ावा मिला है और अंतरराष्ट्रीय समुदाय को शांति प्रयास में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया है। इजराइल और हमास के बीच संघर्ष

केवल एक क्षेत्रीय राजनीतिक मुद्दा ही नहीं है, बल्कि है धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान का भी सवाल है, जिसमे समाधान और भी जटिल हो गया है।

• इजरायल–हमास युद्धः वर्तनाम हिंसक तनाव

इजरायल और हमास के बीच युद्ध वर्तमान समय में सबसे जटिल और विवादास्पद संघर्षों में से एक है। गाजा पट्टी और इजरायल के बीच दशकों से चली आ रही शत्रुता के परिणामस्वरूप यह संघर्ष विवादास्पद बनता जा रहा है। दशकों से चल रहे इस संघर्ष में हाल के वर्षों में हिंसा में तेजी आई है। इजरायल और हमास के बीच के संघर्ष ने कई अंतरराष्ट्रीय सुर्खियां बटोरी हैं, और इसके विभिन्न पहलुओं को समझना ओर आवश्यक बन जाता है।

राजनीतिक, सैन्य, मानवीय और सामाजिक मुद्दों इस युद्ध के समकालीन आयामो में प्रमुख रूप से शामिल हैं। जब हम आज द्वारा इजराइल पर रॉकेट हमले किए गए तो इन हमलों का जवाब देते हुए इजराइल ने भी गाजा पट्टी पर कई बड़े पैमाने पर हमले किए। इन हमलों में मानवीय संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई क्योंकि बड़ी संख्या में नागरिक हताहत हुए है। इस संघर्ष से गाजा में बुनियादी ढांचे को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचाया है, जिसमे, अस्पताल, स्कूल और जल आपूर्ति प्रणाली शामिल है।

कुछ देशों द्वारा इजराइल की सैन्य कार्यवाही को समर्थन मिला है वहीं कुछ देशों द्वारा इसकी आलोचना भी की गई है। मध्य पूर्व में इस संघर्ष ने शक्ति संतुलन को भी प्रभावित किया है, जहाँ हमास को ईरान और तुर्की जैसे देशों का समर्थन मिल रहा है, जबकि अमेरिका आर रशिया जैसे देशों ने इजरायल के प्रति समर्थन जताया है।

मीडिया और सोशल मीडिया इस युद्ध का एक ओर महत्वपूर्ण आयाम है। सोशल मीडिया के माध्यम से प्रसारित हो रही जानकारी इसमें अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। दोनों पक्षों द्वारा इसका उपयोग किया जा रहा है और अपनी स्थिति को सही ठहराने और अंतरराष्ट्रीय समर्थन जुटाने की कोशिश की जा रही है। सोशल मीडिया पर फैली जानकारी कई बार भ्रामक और अतिरंजित हो सकती है, जिसके द्वारा वैश्विक जनमत प्रभावित होता है।

इस युद्ध द्वारा समाज और संस्कृति पर भी प्रभाव पड़ता है। गाजा में रह रहे लोग अपनी जिंदगी संघर्ष की स्थिति में जी रहे हैं, इस स्थिति से उनकी मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ा है। एक नकारात्मक असर वहाँ रह रहे बच्चों की शिक्षा और भविष्य पर भी यह युद्ध

डाल रहा है। वहाँ इजराइल के नागरिक भी हमास द्वारा रॉकेट हमलों के डर में जी रहे हैं। इसके कारण उनकी सामान्य जीवनशैली पर बहुत प्रभाव पड़ रहा है।

सामाजिक और मानवीय दृष्टिकोण से देखें तो इस युद्ध ने दुनिया को एक प्रकार से विभाजित कर दिया है। जहाँ कुछ लोग इजरायल के आत्मरक्षा के अधिकार की बात करते हैं, जबकि कुछ लोग हमास के प्रति सहानुभूति जताते हैं। इसके परिणामस्वरूप यह युद्ध एक वैश्विक राजनीति का महत्वपर्ण मुद्दा बन गया है, जिसमें विभिन्न देशों के आपसी संबंध और उनके राजनीतिक एजेंडा भी शामिल है।

• इजरायल–हमास युद्धः संभावित परिणाम

इजरायल–हमास युद्ध ने विश्व की राजनीति पर गहरा प्रभाव डाला है। इस संघर्ष में पश्चिमी एशिया की स्थिरता की चुनौती दी है, अन्य देशों इस क्षेत्र में अपनी नीतियों पर पुनर्विचार करने के लिए अत्यंत मजबूर किया है। इजरायल और हमास के बीच की यह टकराव केवल एक क्षेत्रीय मुद्दा नहीं है, बल्कि इसने पूरे विश्व के सामने मानवीय संकट और सुरक्षा के सवालों को खड़ा किया है। इस युद्ध में हजारों निर्दोष नागरिक को की जान गई है, जिससे अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन और संयुक्त राष्ट्र ने तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की है।

इस युद्ध ने वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी गहरा प्रभाव डाला है। मध्य पूर्व में तेल की आपूर्ति के खतरे ने तेल की कीमतों में वृद्धि कर दी है, जिससे वैश्विक बाजार अस्थिर हो गया है। अपने–अपने नागरिको को सुरक्षित निकालने के लिए कई देशों द्वारा विशेष प्रयास किए गए हैं, जो कि कूटनीतिक और सैन्य संसाधनों पर भारी प्रभाव डालते हैं। इसी के साथ–साथ कई देशों ने मानवीय सहायता के रूप में बड़ी राशि आवंटित की है, जो उनके बजट पर आंतरिक बोझ डालता है।

इस युद्ध ने आतंकवाद और सुरक्षा जैसे मुद्दों को एक बार फिर से प्रमुखता देने में अपनी भूमिका को निभाया है। हमास को कई देशों द्वारा आतंकवादी संगठन माना जाता है और इसके खिलाफ इजराइल की कार्रवाई को आत्मरक्षा के रूप में देखा जाता है।

इस युद्ध की परिणति के रूप में वैश्विक हथियार व्यापार में वृद्धि हो सकती है, क्योंकि विभिन्न देश अपनी सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए अधिक हथियार खरीद सकते हैं। इसके कारण अंतरराष्ट्रीय हथियार नियंत्रण समझौते पर भी गहरा दबाव बढ़ सकता है। इसके अलावा इस युद्ध

का सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव भी है। विभिन्न देशों में इस युद्ध के प्रति आम जनता की धारणा और प्रतिक्रिया के सामाजिक ताने–बाने और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकती है।

इजराइल–हमास युद्ध एक दीर्घकालिक और जटिल संघर्ष है। जिसका समाधान आसान नहीं माना जा सकता। इस युद्ध का इतिहास काफी पुराना और संघर्षों से भरा रहा है। इजराइल–हमास युद्ध के बहुत समसामयिक आयाम है, जिसमें सैन्य, मानवीय, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू शामिल हैं। इस युद्ध का वैश्विक प्रभाव भी बहुत व्यापक रहा है। इस युद्ध के इतिहास, समसामयिक आयामों और वैश्विक परिणामों को देखते हुए, यह स्पष्ट है कि इस संघर्ष का स्थायी समाधान खोजना अत्यंत आवश्यक है। शांति स्थापना के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के महत्त्वपूर्ण भूमिका है, आर दोनों पक्षों को अपने विवाद का समाधान बातचीत, शांति और सहमति से करना चाहिए।

यह संघर्ष न केवल मध्य पूर्व की स्थिरता के लिए बल्कि वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण है। जब तक इस संघर्ष का समाधान नहीं होता, तब तक क्षेत्र में शांति और स्थिरता की संभावना बहुत कम है।

संदर्भ सूचीः

- Lisa Bayer (2023), your guide to understanding the roots of the Israel-Hamas war. *Bloomberg.*
- Nicole Narea (2023), A timeline of Israel-Palestine's complicated history. *Vox*
- The editors of Encyclopaedia Britannica (2024), Israel-Hamas war: Explanation, summary, casualties & map. *Britannica*
- Clea Simon (2024), Looking at causes, measuring effects of Israel-Hamas war. *Harvard Gazette*
- https://www.drishtiias.com/daily-updates/daily-news-analysis/israel-hamas-conflict-and-its-global-impact
- https://byjus.com/free-ias-prep/israel-palestine-conflict/
- https://www.clearias.com/israel-palestine-conflict/
- https://pwonlyias.com/israel-hamas-conflict/

♦♦♦♦♦

6

इजराइल–हमास युद्धः समसामयिक आयाम, वैश्विक परिणाम

हिताक्षी गिल

जीसस एंड मैरी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय

इजराइल–हमास युद्ध एक जटिल और लंबे समय से चले आ रहे संघर्ष का परिणाम है, जो मुख्यतः इजराइल और फिलिस्तीनियों के मध्य गहन विवादों व असंतोषों से उपजा है। यह संघर्ष न केवल इन दोनों पक्षों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि इसका वैश्विक प्रभाव भी देखने को मिलता है। इस लेख में हम इस युद्ध के समसामयिक आयामों, इसके कारणों, इसके परिणामों, और वैश्विक परिदृश्य पर इसके प्रभावों का विश्लेषण करेंगे।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और विवाद के मूल कारण

इजराइल–फिलिस्तीन संघर्ष का इतिहास 20वीं सदी की शुरुआत से जुड़ा हुआ है, जब ओटोमन साम्राज्य के पतन के बाद ब्रिटिश मांडेट के तहत फिलिस्तीन का गठन हुआ था। यहूदियों और अरबों के मध्य इस क्षेत्र पर दावा और बसाव को लेकर तनाव शुरू हुआ। 1948 में इजराइल की स्थापना के साथ ही यह विवाद और बढ़ गया, जिसके परिणामस्वरूप 1948 का अरब–इजराइल युद्ध हुआ। इसके पश्चात कई और युद्ध हुए, जिनमें 1967 का छह–दिवसीय युद्ध शामिल है, जिसके पश्चात इजराइल ने पश्चिमी किनारा और गाजा पट्टी पर अधिग्रहण कर लिया।

हमास, जो कि एक इस्लामी राजनीतिक और सैन्य संगठन है, 1987 में इजराइल के खिलाफ प्रतिरोध के लिए स्थापित किया गया था। हमास का मुख्य उद्देश्य फिलिस्तीन को ष्स्वतंत्रतष करना और इस्लामी शासन की स्थापना करना है। 2007 में हमास ने गाजा पट्टी पर नियंत्रण हासिल किया, जिसके बाद इजराइल और हमास के मध्य विभिन्न संघर्ष हुए।

समसामयिक आयाम

हाल के वर्षों में, इजराइल और हमास के मध्य संघर्ष कई कारणों से पुनर्जीवित हुआ है। इनमें इजराइल द्वारा गाजा पट्टी की नाकेबंदी, हमास द्वारा रॉकेट हमलों की बढ़ती संख्या, और दोनों

पक्षों के मध्य तनावपूर्ण घटनाएं सम्मिलित हैं। 2021 में यरूशलेम के शेख जर्राह क्षेत्र में घरों से बेदखली और अल–अक्सा मस्जिद में हुई हिंसा ने इस तनाव को और बढ़ा दिया।

इस संघर्ष में इजराइल की सैन्य शक्ति और हमास की गोरिल्ला रणनीति एक प्रमुख भूमिका निभाती हैं। इजराइल अपनी सुरक्षा के लिए आयरन डोम प्रणाली का उपयोग करता है, जो हमास के रॉकेटों को निष्क्रिय करने में सक्षम है। दूसरी ओर, हमास गाजा पट्टी से सुरंगों और अन्य असममित युद्ध रणनीतियों का उपयोग करता है।

राजनीतिक परिप्रेक्ष्य

इजराइल और हमास के मध्य संघर्ष का प्रमुख कारण दोनों के मध्य ऐतिहासिक और धार्मिक मतभेद हैं। हमास, जो एक इस्लामी उग्रवादी समूह है, इजराइल को एक वैध राज्य मानने से इंकार करता है और इसके बजाय फिलिस्तीनी स्वतंत्रता की मांग करता है। दूसरी ओर, इजराइल अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए हमास के साथ संघर्ष में है। इस संघर्ष का राजनीति पर प्रभाव व्यापक है, जिसमें दोनों पक्ष अपने–अपने एजेंडे को लागू करने की कोशिश कर रहे हैं।

मानवीय और आर्थिक परिणाम

इजराइल–हमास संघर्ष का सबसे बड़ा असर आम नागरिकों पर पड़ता है। गाजा पट्टी में रहने वाले फिलिस्तीनियों को इजराइल की नाकेबंदी के कारण आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यहां की जनसंख्या को बुनियादी जरूरतों, जैसे कि पानी, बिजली, और चिकित्सा सुविधाओं की कमी से जूझना पड़ता है।

वहीं, इजराइल में भी रॉकेट हमलों के कारण नागरिकों में भय और असुरक्षा की भावना बढ़ जाती है। इजराइल और हमास के मध्य प्रत्येक संघर्ष में दोनों ओर के सैकड़ों लोग मारे जाते हैं और हजारों लोग घायल होते हैं। बच्चों और महिलाओं पर इस संघर्ष का विशेष रूप से गहरा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि उन्हें अक्सर विस्थापन और हिंसा का सामना करना पड़ता है।

उपलब्धि और समर्थन

संघर्ष ने वैश्विक सुरक्षा और स्थिरता पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। आतंकवाद और उग्रवाद के खिलाफ वैश्विक संघर्ष के संदर्भ में, हमास का मुद्दा अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा की चिंता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। इसके साथ ही, वैश्विक मानवाधिकार संगठन संघर्ष के दौरान मानवाधिकारों के उल्लंघन को लेकर चिंता व्यक्त कर रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया

इजराइल–हमास युद्ध पर अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की प्रतिक्रिया भी महत्वपूर्ण है। संयुक्त राज्य अमेरिका इजराइल का एक प्रमुख सहयोगी है और इसे सैन्य और राजनीतिक समर्थन प्रदान करता है। वहीं, कई अरब और मुस्लिम देश हमास के प्रति सहानुभूति रखते हैं और फिलिस्तीन के पक्ष में खड़े होते हैं।

संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने इस संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान के लिए कई प्रयास किए हैं, लेकिन अब तक इसमें सफलता नहीं मिल सकी है। अधिकांश अंतर्राष्ट्रीय प्रयास संघर्ष विराम और मानवीय सहायता पर केंद्रित रहे हैं, लेकिन स्थायी समाधान की दिशा में ठोस प्रगति नहीं हुई है।

वैश्विक परिणाम

इजराइल–हमास संघर्ष के वैश्विक परिणाम कई स्तरों पर देखे जा सकते हैं। सबसे पहले, यह संघर्ष मध्य पूर्व क्षेत्र में स्थिरता और शांति के लिए एक प्रमुख चुनौती है। यह क्षेत्र पहले से ही सीरिया, इराक, और यमन जैसे संघर्षों से ग्रस्त है, और इजराइल–हमास संघर्ष इस और जटिल बनाता है।

दूसरे, यह संघर्ष वैश्विक राजनीतिक समीकरणों पर भी प्रभाव डालता है। इजराइल और फिलिस्तीन मुद्दा कई देशों की आंतरिक राजनीति में भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। उदाहरण के लिए, अमेरिका और यूरोपीय देशों में रहने वाले यहूदी और मुस्लिम समुदाय इस संघर्ष पर गहराई से ध्यान देते हैं।

तीसरे, इजराइल–हमास संघर्ष वैश्विक आतंकवाद और सुरक्षा के लिए भी एक चुनौती है। हमास को कई देशों ने आतंकवादी संगठन घोषित कर रखा है, और इसके खिलाफ इजराइल की कार्रवाई से वैश्विक आतंकवाद–विरोधी प्रयासों पर भी असर पड़ता है।

हम अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए हर संभव कदम उठाएंगे। हम अपने दुश्मनों को यह संदेश देना चाहते हैं कि हम अपने देश की रक्षा करने में कभी असफल नहीं होंगे।"

– बेंजामिन नेतन्याहू (इजराइली प्रधानमंत्री)

हमास अपने लोगों की रक्षा और उनके अधिकारों की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध है। इजराइली कब्जे के खिलाफ हमारा संघर्ष जारी रहेगा।

– इस्माइल हनिया (हमास के राजनीतिक ब्यूरो के प्रमुख)

इजराइल–हमास संघर्ष एक जटिल और दीर्घकालिक विवाद है, जो गहरे ऐतिहासिक, धार्मिक, और राजनीतिक विवादों से उपजा है। यह संघर्ष न केवल इजराइल और फिलिस्तीनियों के मध्य की खाई को दर्शाता है, बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता के लिए भी एक गंभीर चुनौती ह।

इस संघर्ष का समाधान आसान नहीं है, क्योंकि यह न केवल दोनों पक्षों के मध्य की शक्ति और राजनीतिक असमानताओं को शामिल करता है, बल्कि इसमें अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की विभिन्न स्थिति और हित भी सम्मिलित हैं। तथापि, शांति और स्थिरता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए यह आवश्यक है कि दोनों पक्ष संवाद और समझौते की ओर कदम बढ़ाएं।

अंततः, एक स्थायी समाधान केवल तभी संभव हो सकता है जब इजराइल और फिलिस्तीन दोनों के लोगों की आकांक्षाओं, सुरक्षा चिंताओं और मानवाधिकारों को समान रूप से मान्यता दी जाए और उनका सम्मान किया जाए। इस दिशा में प्रगति के लिए निरंतर प्रयास और समझदारी आवश्यक हैं।

संदर्भ सूचीः

- https://news.harvard.edu/gazette/story/2024/02/looking-at-causes-measuring-effects-of-israel-hamas-war/
- https://www.aspistrategist.org.au/the-global-consequences-of-the-israel-hamas-war/
- ईरान – इजराइल संघर्ष और इसका भारत पर प्रभाव–डेली न्यूज एनालिसिस https://www.dhyeyaias.com/hi/current-affairs/daily-current-affairs/conflict-between-iran-and-israel
- इजराइल–हमास युद्ध पश्चिम एशिया के राजनीतिक परिदृश्य को कैसे बदलेगा https://frontline.thehindu.com/world-affairs/how-israel-hamas-war-will-change-west-asia-political-landscape-palestine-benjamin-netanyahu-gaza-strip/article67403423.ece

♦♦♦♦♦

Aiming High, Touching Sky

सी जी एस

वैश्विक अध्ययन केंद्र

(पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र)

अकादमिक अनुसंधान केंद्र भवन

गुरु तेग बहादुर मार्ग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली– 110007

www.cgs.du.ac.in @cgsofficialdu office@cgs.du.ac.in +91-11-27666281